चक्रश्वान्तिररान्तरेषु जनयत्यन्यामिषाराष्ट्रिम्। चित्रन्यस्तिमिषाचलं हयशिरस्यायामवज्ञामरं यष्ट्रविये च समं स्थितो ध्वजपटः प्रान्ते च वेगानिलात् ॥ ॥ ॥

[निष्कान्तो रथेन राजा सूतशा |

5 रम्भा। हला जहाणिद्दिष्ठं पदेसं संकमामो।

द्रोषस्तथेति द्रोलाभिरोहणं रूपयित्वा स्थिताः ।

रमा। अवि णाम सो राएसी समुध्धरे णो हिअअसर्छ। मनका। मा दे संसभो होटु। उविद्विद्संपराभी महिन्दो मझ्झमलो-

१सिख यथानिर्दिष्टं प्रदेशं संक्रमामहे। — २ अपि नाम स राजिषः समुद्धरेलो हृदयशल्यम्। — ३ मा तव संशयो भूत्। उपस्थितसंपरायो महेन्द्रो मध्यमलोकात्सबहुमानमानाय्य तमेव विजयसेनामुखे नियोजयति।

- 1. N.N2. चक्रन्यस्तम्.
- 2. N. has in the margin चित्रा-रम्भविनिश्वलं against चित्रन्यस्त-मिवाचलम्.
- 3. U. यनमध्ये च समं स्थितो ध्वजपट: प्रान्ते चलश्वानिलात्-G.K. सम-स्थिति:-A. corrects ध्वजपट: प्रान्ते च into ध्वजपटप्रान्तश्व.
- 4. G.K. om. रथेन after राजा.
- 5. U. जशाणिदिइपदेसं; K. जहासंदिई A. जशाणिदिई.—G. देसं, K. पदेसं— A.G. णिकमम्ह; K.U. संकमम्ह—G. K. ins. एश्र after हळा.—N.N2. read हळा गदी राएसी | ता अम्होंवि जहणिद्दे संकेदपदेसं गच्छम्ह. P. om. हळा एश्र and reads जहणि- दिंहं संकमम्ह पदेसं.
- 6. A.N.N2. entirely omit the stage-direction शेषास्तथीत &c. =B.U. शेषाः तहत्ति शैलावतरणं

- रूपित्ना स्थिता:[B. प्रस्थिता:]; P. दोषास्तह इति सर्वा: दोळावतरणं नाय-यित्वा स्थिता:.
- 7. U. assigns the speech to सर्वा:—P. ins. हजा before अवि &c.—N.N2. राअसी for राएसी—B. om. सी.—A. उद्धरि, N.N2. उद्धरिसादि, B. समुध्यरेह, K.G. समुद्धरेह, We with Kâṭavema—N.N2. omit णे; U. अवि णाम सो राएसी णो हिअअसळं उद्धरे; P. हजा अवि णाम सो राएसी णो हिअअसळं अवणहस्सदि.
- 8. A.N.N2. insert हळा before मा.—A.N.N2. omit दे—G. K. भोद-A.U. insert ण before उविष्ट °—N.N2. °संपहारभो; U. उविश्वभसंपराओ; B. उविश्व संपराए; P. उविश्वदे संपहार.